नाट्यम्

91-94

रामजी उपाध्याय का नाट्य साहित्य

प्रधान संपादक
राधावल्लभ त्रिपाठी

संपादक
आनन्दप्रकाश त्रिपाठी

प्रबन्ध संपादक
सञ्जय कुमार

संपादक मण्डल
नौनिहाल गौतम, रामहेत गौतम
शशिकुमार सिंह, किरण आर्या

प्रकाशक
नाट्य परिषद्, संस्कृत विभाग
डाक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय
(केन्द्रीय विश्वविद्यालय) सागर (म.प्र.)

Scanned with CamScanner

नाट्यम् **91-94, अक्टूबर 2019-सितम्बर 2020**
रंगमंच एवं सौन्दर्यशास्त्र की पूर्वसमीक्षित त्रैमासिक शोधपत्रिका
रामजी उपाध्याय का नाट्य साहित्य (शताब्दी स्मरण विशेषांक)
ISSN : 2229-5550
UGC Approved Journal Sr. No. 41002
नाट्य परिषद् **(पंजीकरण क्र. 100066)**
संस्कृत विभाग, डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)
दूरभाष-फैक्स (कार्यालय) 07582-264366 पिन-470 003

Natyam : A Quarterly Journal of theatre and aesthetics
published by Natya Parisad. Deptt. of Sanskrit,
Doctor Harisingh Gour University, Sagar,
Madhya Pradesh-Pin-470 003. India.
Phone-Fax (off.) : 07582-297149

सदस्यता शुल्क :
विशेषांक - 200/- रु.
प्रत्येक अंक - 25/- रु., वार्षिक - 100/- रु.
आजीवन (प्रति व्यक्ति) - 1000/- रु.
आजीवन (प्रति संस्था) - 5000/- रु.
इस अंक का मूल्य - 200/- रु.

यह शुल्क मनीआर्डर, चेक या नगद दिया जा सकता है
जो नाट्य परिषद्, सागर के नाम देय होगा।

पत्रव्यवहार :
प्रो. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी
अध्यक्ष, संस्कृत विभाग
डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.) 470003
e-mail : sanskritsagar1946@gmail.com, Mob : +919425656284
© सर्वाधिकार सुरक्षित

मुद्रण : अजय जैन, **अमन प्रकाशन** नमक मंडी,
कटरा, सागर (म.प्र.) मो. 9826434225

नाट्यम् में प्रकाशित नाटकों के अनुवादों/रूपान्तरों या किसी भी अन्य सामग्री की किसी भी रूप में प्रस्तुति के लिए *नाट्य परिषद्* से अनुमति प्राप्त करना आवश्यक है।
प्रकाशित रचनाओं की रीति-नीति अथवा विचारों से *नाट्य परिषद्*, संपादक या संपादक मंडल की सहमति अनिवार्य नहीं है।

सूचना - आजीवन ग्राहकों को डाक व्यय 250 रु. (दो सौ पचास रूपये मात्र) पर नाट्यम् के उपलब्ध पुराने अंक भी निःशुल्क देय हैं।

Scanned with CamScanner

24

रामजी उपाध्याय के नाटकों में लोकहित की प्रतिष्ठा

नौनिहाल गौतम

'लोक' संस्कृत साहित्य में अत्यंत प्रचलित शब्द है। लोक की अवधारणा के विषय में अभिनवकाव्यालङ्कार सूत्र में विस्तृत विवेचन प्राप्त होता है। नाट्यशास्त्र में भी सुख-दुःख से समन्वित स्वभाव वाला लोक माना गया है।[1] अभिनवगुप्त के मत में लोक से आशय जनपदवासी जन से है। उनका मत भी द्रष्टव्य है- 'लोको नाम जनपदवासी जनः। जनपदश्च देश एव।'[2] मम्मटाचार्य स्थावरजङ्गमात्मक लोक के व्यवहार को लोक के रूप में स्वीकार करते हैं। यथा- 'लोकस्य स्थावरजङ्गमात्मकस्य लोकवृत्तस्य'[3]। लोक की विविध व्याख्याएं विद्यमान हैं किन्तु यहाँ लोक को मुख्य रूप से मानव सहित सभी प्राणियों के जीवन से सम्बन्धित अर्थ में लिया गया है। लोक हित को साधने के लिए ही अवतार हुआ करते हैं- 'परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुश्कृताम्'[4] भारतीय संस्कृति और प्राच्य साहित्य परंपरा के पोषक आचार्य रामजी उपाध्याय की नाट्य कृतियों में लोकहित की साधना की प्रतिष्ठा दिखाई देती है जिसका निरूपण यहाँ प्रस्तुत है।

'कैकेयीविजयम्' यह रामजी उपाध्याय की सर्वाधिक चर्चित नाट्यकृति है। इस ग्रन्थ की भूमिका की प्रथम पंक्ति में ही वे लिखते हैं - 'कैकेयी ने अपने युग में सात्त्विक राजनीति और लोकहित की साधना के लिये चारित्रिक आदर्श प्रतिष्ठित किये।'[5] आमुख में कैकेयी का व्यक्तित्व निरूपित करते हुए वे कहते हैं- 'सबका विश्वास पात्र होने पर भी उसे अपने प्रेष्ठ राम और प्रियतम दशरथ से पृथक् होते एक क्षण की भी देर न लगी, जब उसके सामने राक्षसों के चङ्गुल से दण्डकारण्य के ऋषियों की सुरक्षा का प्रश्न आया। केवल राम की ही नहीं, भरत की भी आकांक्षाओं की पूर्ति के पथ में वह कण्टक बनी, क्योंकि उसे लोकहित करना था, विश्वहित करना था' (आमुख पृ. 11)। वे प्रस्तावना में यह निर्दिष्ट करते हैं कि

Scanned with CamScanner